माघकवि माघ के विविध पक्ष

जयप्रकाश शर्मा
साहित्याचार्य, पाण्डुलिपि विशेषज्ञ

'शिशुपालवध' में निहित माघ की कवित्व-प्रतिभा की संस्कृत विद्वानों ने प्रशंसा की है। एक प्रश्न उपस्थित होता है कि भीनमाल क्षेत्र में ऐसी अन्य कोई रचना उपलब्ध क्यों नहीं होती? और क्या माघ का 'शिशुपाल वध' नामक महाकाव्य कवि की एकाकी रचना थी ? इसके पीछे क्या कारण या ? हम जानते हैं कि गुप्तवंश के पतन के बाद, संस्कृत भाषा, जो काफी महत्त्वपूर्ण भाषा थी, उसका सम्पर्क सामान्य जनता से छूट गया तथा जब उसमें क्षरण की प्रक्रिया आरम्भ हो गई, तब प्राकृत भाषा की प्रगति हो रही थी। भीनमाल क्षेत्र में दो महत्त्वपूर्ण प्राकृत व्याख्याएँ - 'निशीथचूर्णि' तथा 'कुवलयमाला' की रचना हुई। 'निशीथचूरिर्णि' में भीनमाल प्रदेश और उसके शासक वर्मलात के कुछ प्रसङ्ग हैं। ई. सन् 778 में जालोर में 'कुव-लयमाला' की रचना हुई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्मलात के पश्चात् शीघ्र ही भीनमाल प्रदेश प्रतिहारों के अधिकार में आ गया। प्रतिहार नाग- भट्ट प्रथम ने जालोर पर विजय प्राप्त की और वहां अपनी राजधानी स्थापित की।

ऐसा लगता है कि भीनमाल से बड़ी मात्रा में लोगों ने निष्क्रमण किया तथा उनमें से अधिकांश व्यक्ति गुजरात के अन्हिलवाड़ पाटन चले गये। अतः संस्कृत पण्डितों की बड़ी संख्या ने भीनमाल छोड़ दिया होगा और चौल शासकों के साथ वे पाटन में बस गये होंगे ? जालोर में विक्रम संवत् 962 अर्थात् ईस्वी सन् 915 में जैन विद्वान् सिद्धर्षि ने 'उपमिति- भवप्रपञ्चकथा' की संस्कृत में रचना की। सम्भवतः संस्कृत गद्य-रचना में यह पुस्तक एक सर्वोत्तम कृति है और साहित्यिक गुणों में इसकी तुलना बाण भट्ट की कादम्बरी से की जा सकती है। जहां तक विषयवस्तु का सम्बन्ध है, यह रचना कादम्बरी से भी कुछ बातों में उत्तम है, जो मानव जीवन के विविध पक्षों, समाज तथा वातावरण का चित्रण करती है। चूंकि लेखक जैन था, अतः ब्राह्मण-विद्वानों ने उसे मान्यता नहीं दी और उसके उल्लेखनीय गुणों के उपरान्त भी पश्चाद्वर्ती संस्कृत रचनाओं में उसका कोई उल्लेख नहीं है। इससे सिद्ध

होता है कि ब्राह्मण पण्डित इतने शक्तिशाली थे कि ब्राह्मणेतर विद्वानों द्वारा लिखित या रचित कृति को कोई महत्व नहीं दिया गया। 'उपमितिभवप्रपञ्चकथा' तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक वातावरण के सम्बन्ध में अनुपम कृति है।

निःसन्देह भीनमाल क्षेत्र काफी लम्बे समय तक सम्पन्न रहा। वसन्तगढ़ शिलालेख से प्रतीत होता है कि विक्रम संवत् 680 में वर्मलात ने यहां शासन किया। उसके राज्य का विस्तार माउण्ट आबू तक था। माघ के पितामह सुप्रभदेव वर्मलात के मन्त्री थे। उनके राजघराने से निकट सम्बन्ध रहे होंगे तथा उन्होंने कुलीनों के रहन-सहन का अवलोकन किया होगा। माघ की कृति का उसके काव्य-मूल्यों के अध्ययन की अपेक्षा सही परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक अध्ययन अधिक महत्त्वपूर्ण है।

हमें ज्ञात होता है कि 7 वीं शताब्दी में श्रंङ्गधर नामक कलाकार हुआ, जिसने पाश्चात्य भारतीय कला शाखा आरम्भ की थी। लामा तारानाथ के इतिहास में उसकी कला-प्रवृत्तियों का सङ्केत है। शील, जो सम्भवतः प्रतिहार शासक था, उसके राज्य में श्रंङ्गघर ने समृद्धि प्राप्त की। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रङ्गधर माघ का समकालीन था। 'शिशुपालवध' में हमें चित्र- कला के उल्लेखनीय प्रसङ्ग नहीं मिलते, जबकि 'कुवलयमाला' में चित्रकला का ज्वलन्त वर्णन पाया जाता है, जैसे चित्रपट्ट तथा उसकी आलोचनात्मक व्याख्या आदि । 'कुवलयमाला' के रचयिता ने कुछ चित्रपट्ट का उल्लेख इतनी सूक्ष्मता से किया है कि ऐसा लगता है जैसे उसने स्वयं उसे देखा हो। 'शिशुपालवध' में माघ चित्रकला के सम्बन्ध में मौन हैं, जबकि 80 वर्षों पश्चात् रचित 'कुवलयमाला' में उसका वर्णन है। इस कला का विकास जालोर में हुआ था, यह कदाचित् श्रङ्गधर का ही प्रभाव था।

माघ के प्रायः समकालीन शिलालेख में भीनमाल क्षेत्र के शिल्प का उल्लेखनीय वर्णन प्राप्त होता है। विक्रम संवत् 743 के नागौर-शिलालेख में सूत्रधार गृहभट्ट, सूत्रवर्मा, गृहवर्मा एवं गङ्गवर्मा का उल्लेख है, जो रूपकर्म में सिद्धहस्त थे और जो भीनमाल से आकर नागौर बस गये थे। उन्हें ब्रह्मा के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। विक्रम संवत् 744 के वसन्तगढ़- शिलालेख में भी यह भावना है, जहां शिल्पी शिवनाग को साक्षात् पितामह कहा गया है। ये सभी सन्दर्भ सिद्ध करते हैं कि उस समय शिल्पकला उन्नत अवस्था में थी और अनेक शिल्प-कृतियाँ बनाई गईं थीं। ओसियां, घाणेराव, पाली, जालोर, भीनमाल, वसन्तगढ़ तथा मूगथला के प्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण इसी काल में हुआ था।

हमें सांस्कृतिक अध्ययन के लिये कुछ सन्दर्भ 'शिशुपालवध' में मिलते हैं। माघ द्वारा मदहोश व्यक्तियों के चित्रण से यह प्रतीत होता है कि उन दिनों मद्य का प्रयोग लोकप्रिय था। इसे सिद्ध करने के लिये हमारे पास शिलालेख-सम्बन्धी तथा साहित्यिक प्रमाण है। बाउक और कक्कुक के शिलालेख में यह उल्लेख है कि हरिश्चन्द्र प्रतिहार के जिन पुत्रों ने मद्य का सेवन किया वे क्षत्रिय हो गये और जो इससे विरत रहे, वे ब्राह्मण बने रहे । 'उपमितिभवप्रपञ्चकथा' में मद्यपान गृहों तथा वहां के मदहोश व्यक्तियों के आचरण का वर्णन है।

भीनमाल प्रदेश, वहां रहनेवाले भीलों के लिये प्रसिद्ध था। 'कुवलयमाला' में उनके विषय में कतिपय उल्लेख हैं। राजकीय जीवन, प्रशासकीय शब्दावली तथा अन्य सांस्कृतिक विषयों के सम्बन्ध में माघ का विवेचन उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है। प्रशासकीय शब्दावली का प्रयोग करते हुए माघ ने बड़ी सुन्दरता से राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की है। जैसे-

अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्ति सन्निबन्धना।

शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा॥

सम्भवतः महाकवि माघ के देहावसान के पश्चात् जालोर और भीनमाल पर प्रतिहारों का अधिकार हो गया। इस काल के विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की गतिविधियों का ज्ञान विभिन्न स्रोतों से होता है। शैव, वैष्णव और शाक्त मतों का उल्लेख 'शिशुपालवध' में है। इस क्षेत्र में जैन धर्मावलम्बी भी आ बसे थे। उस समय सूर्योपासना बहुत लोकप्रिय थी। 'उपमितिभवप्रपञ्चकथा' में, इस क्षेत्र में प्रचलित 50 से अधिक उप-सम्प्रदायों का उल्लेख है, इनमें शैवमत का प्राधान्य था।

हम कह सकते हैं कि महाकवि माघ का काल ऐश्वर्य का काल था। हाल में उत्तर गुजरात में हूण तोरमाण के दो ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं। 'कुवलयमाला' में उल्लेख है कि वह जैन धर्म का आश्रयदाता था। पाली तथा भीनमाल में उत्खनन द्वारा विदेशी प्रभाव वाले दो विष्णु-सिक्के मिले हैं, जो अब जोधपुर तथा बड़ौदा संग्रहालय में सुरक्षित है।

अतः इन सब बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए माघ के काल का सही परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाना चाहिये।